हरिप्रसाद भण्डारी

ई—मेल-bhandari.hariprasad@gmail.com

न्याय

गीदड़ बेशर्मी से जंगल में घुसा। जंगली जानवरों और उनके बच्चों को मारने, दुखी करने लगा।

मृग, जिराफ, गेंडा, गदहा आदि शाकाहारी जानवर एक जगह पर इकट्ठा हुए और योजना बनायी। गीदड़ के खिलाफ वन के राजा सिंह के पास निवेदन करने की सहमति बनी।

"प्रभु, गीदड़ ने बहुत दुखी कर दिया है। हमारे वंश के नाश की नौबत आ गयी है। आप कड़ी से कड़ी कार्रवाई करके उसे दंडित करें।" सभी जानवरों ने एक स्वर में विनती की।

जानवरों की विनती सुनने के बाद सिंह क्रोध के वशीभूत हो गया। बोला, "दुष्ट गीदड़ की इतनी हिम्मत! धैर्य रखो, मैं शीघ्र ही उसे ठिकाने लगाता हूँ।"

सिंह की बात सुनकर सभी जानवर खुश हुए। वे आपस में बात करने लगे—"राजा राजा ही होता है।"

उसके बाद ऊँची गर्जना के साथ सिंह बोला, "b'i6 गीदड़ को फौरन मेरे सामने हाजिर करो।"

दुष्ट गीदड़ के खिलाफ जंगल के राजा सिंह को कड़ी से कड़ी कार्रवाही की घोषणा करते सुन सभी जानवरों में न्याय की आशा जागी। कुछ समय बाद, अपनी पूँछ नीचे घसीटता हुआ गीदड़, सिंह के सामने हाजिर हुआ। वह बहुत डरा हुआ था।

उपस्थित सभी जानवरों की निगाहें उस पर जम गयीं।

अपनी तरफ आते गीदड़ को देख सिंह ने उसे और नजदीक बुलाया। जानवरों में खुशी की लहर दौड़ गयी।

"अब सिंह गीदड़ की गरदन मसलकर रख देगा!" सभी आपस में बात करने लगे।

और उसी समय, जब सिंह ने गीदड़ को अपने पास बुलाया, उसके कान में धीरे-से बोला, "धूर्त गीदड़! मृग और जिराफ का मांस तू अकेला ही खा गया! मेरा हिस्सा कहाँ है?"

हिन्दी अनुवाद : लेखक द्वारा स्वयं

तिलोत्तमा नगर, जिला रूपन्देही, लुम्बिनी प्रदेश के डा. हरिप्रसाद भण्डारी नेपाल के जानेमाने लेखक हैं । ये लम्बे समय सरकारी सेवा में रहे । भण्डारी का 'चिराग', 'अविरल यात्रा', 'काला सर्पको खोजी' और 'समयको स्पन्दन' शीर्षक से चार लघुकथा संग्रह तथा विनय कसजूका लघुकथामा व्यङ्ग्य विषयक एक समालोचना ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं । भण्डारी ने 'नेपाली लघुकथामा व्यङ्ग्य' विषय में विद्यावारिधि उपाधि हासिल की है ।